डॉ0 प्रजापति सिंह

सहायक प्राध्यापक : शिक्षाशास्त्र विभाग

राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा, बिहार–852201

**(C-06) विषयः जेण्डर, विद्यालय और समाज (Gender, School & Society)**

# जेण्डर और लिंग की अवधारणा
# (Concept of Gender & Sex)

## लिंग (Sex) और जेण्डर (Gender) की अवधारणा :

'लैंगिक' शब्द अंग्रेजी भाषा 'जेण्डर' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। लैंगिक से अभिप्राय लिंग को उसके अनुरूप भूमिकाओं अथवा व्यवहारों में आवश्यकतानुसार व्याख्यापित करना। हिन्दी व्याकरण के अनुसार "संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु के पुरूष या स्त्री जाति के होने का बोध हो उसे लिंग कहा जाता है।" सामान्यतः 'लिंग' का अर्थ है पहचान, प्रतीक या बोध जैसे 'पुलिंग' का अर्थ है, पुरूष का प्रतीक, 'स्त्रिलिंग' का अर्थ है, स्त्री का प्रतीक तथा इसी प्रकार से 'शिवलिंग' का अर्थ है, भगवान शिव का प्रतीक।

Dr. Praja Pati Singh

हमारे समक्ष यह एक समस्या है, क्योंकि अंग्रेजी भाषा में इसके लिए दो अलग–अलग 'सेक्स' और 'जेण्डर' शब्द हैं लेकिन हमारे एशियाई देशों में विशेष रूप से भारत के हिन्दी व संस्कृत भाषा में इन दोनों शब्दों के लिए एक ही शब्द 'लिंग' (Sex) का प्रयोग किया जाता है। उक्त दोनों शब्दों में अंतर को स्पष्ट करने के लिए हमने दो शब्द खोजे। 'सेक्स' शब्द के लिए 'प्राकृतिक लिंग' और 'जेण्डर' शब्द के लिए 'सामाजिक लिंग'।

सामान्यः देखा जाय तो 'सेक्स' और 'जेण्डर' शब्दों में कोई विशेष अन्तर प्रतीत नहीं होता है, यहाँ तक कि हमलोग अक्सर जेण्डर को सेक्स मान लेते हैं, परन्तु 'सेक्स' और 'जेण्डर' में स्पष्ट भेद है। 'सेक्स' और 'जेण्डर' में भेद को स्पष्ट करने में नारीवाद का महत्वपूर्ण योगदान है। 'सेक्स' एक जैविक शब्दावली है जो स्त्री व पुरूष के जैविक या प्राकृतिक भेद को प्रदर्शित करती है। वहीं 'जेण्डर' शब्द स्त्री व पुरूष के सामाजिक भेदभाव को बतलाता है। 'जेण्डर' शब्द इस बात की ओर इशारा करता है कि पुरूष तथा स्त्री में जैविक भेद के अतिरिक्त जितने भी भेद दिखते हैं, वे प्राकृतिक न होकर समाज द्वारा बनाये गये हैं। इसी में यह बात भी सम्मिलित है कि अगर यह समाजीकृत है तो इसे दूर भी किया जा सकता है। समाज में स्त्रियों व पुरूषों के बीच होने वाली भेदभाव के पीछे सामाजीकरण की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया 'जेण्डरीकरण' है। इसमें हर समाज व संस्कृति में लड़कों और लड़कियों की अहमियत निर्धारित करने और उन्हें भूमिकाएं, जवाबदेही और विशेषताएं प्रदान करने के अपने–अपने तरीके होते हैं। हर समाज व संस्कृति में लड़कों और लड़कियों को धीरे–धीरे पुरूष या स्त्री के रूप में उनकी पुरूषोचित (Masculinity) या स्त्रियोचित (Femininity) विशेषताओं के साथ विकसित किया जाता है, जिसमें गुण, व्यवहार के तरीके, भूमिकाएं, जिम्मेदारियां, अधिकार और उम्मीदें भी अलग–अलग होती हैं। जन्म के समय से ही लड़कों और लड़कियों को अलग–अलग रूप में ढालने की जो सामाजिक व सांस्कृतिक प्रक्रिया शुरू होती है उसे ही 'जेण्डरीकरण' कहा जाता है।

हम अपने आसपास के सामाजिक वातावरण को यदि देखें तो हमारी सामाजिक संरचना में कुछ विशेष प्रकार की भूमिकाएँ एवं दायित्व पहले से निर्धारित नजर आते हैं। जैसे स्त्रियों व पुरूषों के लिए अलग–अलग भूमिकाएँ। इन्हीं के आधार पर निश्चित किया जाता है कि कौन–कौन सी भूमिकाएँ केवल पुरूषों के लिए हैं, कौन–कौन सी भूमिकाएँ केवल स्त्रियों के लिए हैं तथा कौन सी भूमिकाएँ ऐसी है जो स्त्री व पुरूष के लिए समान हैं। इसे एक उदाहरण के माध्यम से और स्पष्ट करते हैं– साधना बचपन से इस बात को देखते आ रही है कि उसके परिवार में उसके और उसके छोटे भाई विनय में के लिए अलग–अलग व्यवहार की अपेक्षा होती है। विनय देर तक बाहर रह सकता है, लेकिन उसे अधिक समय तक बाहर रहने नहीं दिया जाता है। एक दिन की बात है, साधना किसी बात से नाराज कुछ ऊँची बोली तो माँ ने उसे बहुत डाँटा– लड़की होकर इतने ऊँचे सुर में बात करती हो! लड़कियों को पराये घर जाना होता है। इस प्रकार ऊँचे सुर में बात करोगी तो तुम्हारे घर वाले क्या कहेंगे? जबकि विनय के इस प्रकार के व्यवहार पर माँ कुछ भी नहीं बोलती है। स्कूल तक दोनों बहन–भाई साथ–साथ पढ़े, लेकिन अब साधना नहीं पढ़ती है। अब साधना पर बहुत सारी पाबंदियाँ लग गई। जैसे बाहर खेलना, लड़कों के साथ बात करना, ऊँची आवाज में बात करना, बाहर घूमने जाना, फिल्म देखने जाना आदि। अब वह अधिकतर समय माँ के साथ घर के कार्यों में लगी रहती है। एक–दो बार उसने आगे पढ़ने के बोली भी लेकिन घर वालों ने उसको मना कर दिया। यदि साधना को कभी घर से बाहर जाना होता था तो उसके साथ विनय को जरूर भेज दिया जाता था, कभी भी उसे अकेले घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। इसके विपरीत विनय को इंजिनियर बनाने के सपने देखा जा रहा है। उसे घर का कोई काम नही करना पड़ता है और न ही बाहर आने–जाने की कोई पाबंदी है। अब यह बात साधना को धीरे–धीरे समझ में आ गई कि उसे कौन–कौन से कार्य करना है और कौन–कौन से कार्य नहीं करना है। अर्थात धीरे–धीरे साधना व विनय का उनकी भूमिकाओं के अनुसार समाजीकरण के माध्यम से 'जेण्डरीकरण' हो जाता है।

Dr. Praja Pati Singh

उपर्युक्त बातों पर ध्यान दिया जाय तो 'सेक्स' और 'जेण्डर' की अवधारण के रूप में हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि हर व्यक्ति शिशु के रूप में जन्म लेता है। जिसके 'सेक्स' की पहचान उसके जननांगो को देखकर की जाती है कि यह लड़का है या लड़की। अतः 'सेक्स' की पहचान जन्म से जैविकीय (Biological) रूप में मिलती है। पुरूष तथा स्त्री की 'जेण्डर' पहचान सांस्कृतिक व सामाजिक रूप से तय की जाती है। जिसकी पहचान उनकी सामाजिक भूमिकाओं के आधार पर होती है। उदाहरणस्वरूप जब हम यह कहते है कि अपने जैविकीय रचना के कारण स्त्री ही बच्चे को जन्म दे सकती है, उन्हें दूध पिला सकती हैं पुरूष नहीं अथवा लड़का या लड़की का निर्धारण पुरूष के गुणसूत्र पर निर्भर करता है स्त्री के नहीं। यह सभी जैविक भेद है, जो 'सेक्स' की ओर इंगित करते हैं, इसमें समाज चाहकर भी कुछ बदलाव नहीं कर सकता है। तथा जब हम यह कहते है कि केवल स्त्री ही बच्चे का पालन–पोषण कर सकती हैं पुरूष नहीं या घर का कार्य केवल स्त्रियों के लिए होता है, पुरूषों के लिए नहीं या घर से बाहर का खेलकूद केवल लड़कों के लिए है लड़कियों के लिए नहीं। यह सभी सांस्कृतिक व सामाजिक भेद है, जो 'जेण्डर' को बतलाते है। इसमें समाज, समय, स्थान व संस्कृति के अनुसार बदलाव सम्भव है।

## जेण्डर (Gender) और लिंग (Sex) का अर्थ :

'जेण्डर' एक सामाजिक–सांस्कृतिक शब्दावली है, यह स्त्री व पुरूष के बीच सामाजिक विभाजन है, जो समाज में 'स्त्री' व 'पुरूष' के अपेक्षित कार्यों व व्यवहारों को प्रदर्शित करता है। कमला भसीन के अनुसार "जेण्डर, सामाजिक व सांस्कृतिक रूप में स्त्री–पुरूषों को दी गई परिभाषा है; जिनके माध्यम से समाज उन्हे स्त्री और पुरूष दोनों की सामाजिक भूमिकाओं में विभाजित करता है। यह समाज की

सच्चाई को मापने का एक विश्लेषणात्मक औजार है।" इस संदर्भ में एन. ओकले (N. Oakley) ने 'जेण्डर' को स्पष्ट करते बताया है कि–"'जेण्डर' का सम्बन्ध संस्कृति से है, इसका तात्पर्य पुरूषों व महिलाओं का पुरूषोचित (Masculinity) या स्त्रियोचित (Femininity) वर्गो में सामाजिक विभाजन है।"

लिंग (Sex) एक जैविक शब्दावली है, यह स्त्री व पुरूष के बीच प्राकृतिक विभाजन है, जो 'स्त्री' व 'पुरूष' के जैविकीय (Biological) कार्यों को प्रदर्शित करता है। इस संदर्भ में एन. ओकले (N. Oakley) ने कहा है कि "सेक्स का तात्पर्य पुरूषों तथा स्त्रियों के जैविक विभाजन से है।" यहाँ तक कि संसार में सभी जीवित प्राणियों को जैविकीय आधार पर दो वर्गों नर व मादा में बाँटा गया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि 'जेण्डर' सामाजिक–सांस्कृतिक शब्द है जिसका सम्बन्ध पुरूष व स्त्री के बीच मानवीकृत, सामाजिक व सांस्कृतिक अन्तर से है, जो समाज में 'पुरूषों' व 'महिलाओं' के कार्यों व व्यवहारों को परिभाषित करता है, जबकि 'सेक्स' जैविक शब्द है जो 'स्त्री' व 'पुरूष' के जैविकीय (Biological) कार्यों को प्रदर्शित करता है तथा सभी मनुष्यों को नर व मादा के रूप में परिभाषित करता है।

## लिंग (Sex) और जेण्डर (Gender) में अन्तर :

सामान्यतः 'सेक्स' और 'जेण्डर' में कोई विशेष अन्तर प्रतीत नहीं होता है, क्योंकि व्यक्ति के जैविक या सामाजिक निर्धारण इन दोनों के आधार पर ही होता है। इतनी समानता के बावजूद 'सेक्स' और 'जेण्डर' में स्पष्ट अन्तर है। जिसका विवरण निम्नलिखित है–

Dr Raja Pati Singh

| | लिंग (Sex) | जेण्डर (Gender) |
|---|---|---|
| 1. | 'सेक्स' जैविक या शारीरिक होता है। | 'जेण्डर' सांस्कृतिक व सामाजिक है। |
| 2. | 'सेक्स' का सम्बन्ध पुरूष व स्त्री के जननांगो तथा उनसे जुड़े प्रजनन कार्यों से है। | 'जेण्डर' का सम्बन्ध पुरूष व स्त्री के पुरूषोचित (Masculinity) या स्त्रियोचित (Femininity) गुणों, व्यवहार के तरीकों, भूमिकाओं, जिम्मेंदारियों आदि से है। |
| 3. | 'सेक्स' प्राकृतिक है अर्थात् इसका निर्धारण प्रकृति द्वारा होता है। | 'जेण्डर' मानवीकृत है अर्थात् इसका निर्धारण मनुष्यों द्वारा होता है। |
| 4. | 'सेक्स' स्थाई होता है। यह सभी स्थानों पर, प्रत्येक समय, प्रत्येक संस्कृति में सदैव एक ही रहता है। | 'जेण्डर' परिवर्तनशील होता है। यह स्थान, समय, संस्कृति यहाँ तक कि एक परिवार से दूसरे परिवार में परिवर्तित हो सकता है। |
| 5. | यह सार्वभौमिक होता है। | यह स्थानीय होता है। |
| 6. | यह शारीरिक होता है। | यह व्यवहारिक होता है। |
| 7. | इसमें व्यक्ति का निर्धारण नर व मादा के रूप में होता है। | इसमें व्यक्ति का निर्धारण पुरूषोचित व स्त्रियोचित गुणों के रूप में होता है। |

इस प्रकार हम देखते है कि 'सेक्स' और 'जेण्डर' दोनों अलग–अलग शब्द है तथा दोनों में स्पष्ट रूप से अन्तर है। एक ओर जहाँ सेक्स शब्द का प्रयोग स्त्री व पुरूषों में जैविक भिन्नता को दर्शाने के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि दूसरी ओर जेण्डर शब्द का प्रयोग स्त्री व पुरूषों के सामाजिक व सांस्कृतिक असमानता को प्रदर्शित करने के लिए प्रयुक्त होता है।